भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 18 अंक : 7 | बुधवार, 26.7.1995 | वार्षिक चंदा : 50.00

सच्चा रक्षाबंधन.....

हर साल की तरह प्रेम के चार धागों की पवित्रता की शक्ति का प्रतीक रूप रक्षाबंधन का त्यौहार नजदीक आ गया। हम विचार करें कि इन चार धागों में कैसी अद्‌भुत शक्ति होगी, जो युगों से भाई-बहन के संबधों की परम्परा को प्रगाढ़ता से आपस में बांधे हुए है और आगे भी युगों तक निरन्तर चलती रहेगी। जगत में जैसे भाई-बहन का संबंध है, उसी प्रकार - अरे! उससे कई गुना अधिक भगवान व भक्त का 'शाश्वत् संबंध' है। भगवान कृष्ण ने पाण्डवों के लिए उत्तरा के गर्भ का रक्षा की, भक्त प्रहलाद् की अग्नि से रक्षा, दुःशासन द्वारा द्रौपदी की चीर हरण किए जाने पर भगवान कृष्ण द्वारा की गई रक्षा, नरसिंह महेता की हुंडी भरना आदि प्रसंग भगवान और भक्तों के संबंधो का रक्षा करने के प्रतीक है। ये सब प्रसंग स्पष्ट करते हैं कि सच्ची रक्षा तो जगत के भाई -बहनों को भी मानवस्वरूप में भगवान प्रगटाई हुई विभूति द्वारा ही संभव है, क्योंकि जीव अपने झूठे अभिमान, ताकत के नशे में या तो दौलत द्वारा अपनी रक्षा के लिए लोहे का कवच तो बनवा लेता है, लेकिन उसे अपने भीतर में ही छिपे बैठे काम, क्रोध, लोभ, ईष्या, वासना, तृष्णारूपी 51 भूतों- चोरों का तो ख्याल ही नहीं, जो उसे निरन्तर अपने शिकंजे में लेकर लूटते ही रहते हैं.....इन 51 भूतों से रक्षा कराने हर किसी के लिए भगवत्स्वरूप संत की शरण- निष्ठा जीवन में अत्यंत आवश्यक नहीं- अनिवार्य है।

हमारे भाग्य का तो पार नहीं, क्योंकि भगवान स्वामिनारायण ने अपने आश्रितों को काल, कर्म, माया से बचने अभय वरदान तो बक्षिश में दिए ही और साथ ही भीतर के शत्रुओं से रक्षा कैसे हो सकती है, उसका मार्गदर्शन देने वाले- बल देने वाले गुणातीत संतों की परम्परा धरती पर अखंडित रख दी। आज भी स्वामिनारायण सम्प्रदाय में प्रगट की निष्ठा वाले आश्रित किसी भी प्रकार के जादु- टोने, ग्रह-पनौती, तंत्रमंत्र, ज्योतिष विद्या आदि से भयभीत होते हुए कभी भी दिखाई नहीं पड़ेंगे- बल्कि प्रगट के संबंध से हमेशा निर्भय व निश्चिंत दिखाई पड़ेंगे.... शुद्ध शस्त्र भजन का उपाय-भगवान का बल लेकर जीवन व्यतीत करते दिखाई पड़ेंगे... हाँ, यह अवश्य है कि अडिग श्रद्धा, विश्वास, दृढ़ निष्ठा, प्रत्यक्ष प्रभु को ही कर्ताहर्ता मानकर जीने वालों की यह बात है, ना कि केवल आयाराम-गयाराम का सत्संग करने वालों की....तो यदि हम पर प्रभु रखे संत की सेरेछाया का रक्षाकवच हो तो हम बाहरी व भीतरी दोनों प्रकार से हमेशा सुरक्षित

रहेंगे.....

इसी संदर्भ में भगवान सवमिनारायण की अपने आश्रितों के प्रति की कल्पना से पर की बेहद प्रीति, करुणा का-भक्तों की रक्षा करने के स्वभाव का सम्यक् दर्शन वच. जेतलपुर 11 में होता है-

भगवान स्वामिनारायण ने रात्रि के डेढ़ प्रहर-यानि साढ़े ग्यारह-बारह बजे बीत जाने पर थोड़ा विचार करने के पश्चात् बात करी कि-**'सभी सुनो ! आज तो जैसी बात है, वैसी ही बात करनी है कि भगवान का भजन करना, उससे अधिक कोई बड़ी बात नहीं....'**

और..... बात करी-**'हम तो इस संत सहित जीवों के कल्याण के लिए प्रगट हुए हैं इसलिए तुम यदि हमारा वचन मानोगे तो हम जिस धाम में से आए हैं उसी धाम में तुम सब को ले जायेंगे व तुम भी ऐसा मानना कि तुम सब का कल्याण हो चुका है और यदि हमारा दृढ़ विश्वास रखोगे तथा जैसा हम कहें, वैसे करते रहोगे तो तुम पर आये कोई भारी कष्ट से या सात-सात साल के दुकाल जैसी भीषण विपत्तियों से भी हम आपकी रक्षा करेंगे एवं बचने का कोई भी चारा न हो-ऐसे कष्ट से भी रक्षा करेंगे, बशर्ते हमारे सत्संग के नियम खूब पालेंगे और सत्संग रखोगे तो....'**

जब महाराज ने बिना मांगे अपने आश्रितों को इतने भव्य आशीर्वाद दे दिए तो क्यों ना हम उन्हें अखंड धारे ऐसे उनके गुणातीत स्वरूपों का स्थान प्रथम रखकर निर्भय व निश्चिंत जीवन जीएं? दूसरी ओर रक्षाबंधन के पवित्र त्यौहार के उपलक्ष्य में-आईए, प.पू. काकाजी द्वारा लिखित एक पत्र को पढ़ कर, मनन-चिंतन कर जीवन में उतारने का प्रयास करें.....

स्वामिश्रीजी

शिकागो

27.7.79

युवकों, बहनों, गृहस्थों, सभी आत्मबुद्धि वाले... लि. आपके ही दादुकाका, रमेश, दिनुभाई, गोविंदभाई, रमणभाई सभी के हेतपूर्वक जय श्री स्वामिनारायण !

-: रक्षाबंधन की कथावार्ता :-

1. प.पू. शास्त्रीजी महाराज और प.पू. योगी बापा के साथ देहभाव व जीवभाव का मायिक अंतराय ज़रा-सा भी रह गया होगा इसी वजह से प्रत्यक्ष स्वरूपों में मायिकभाव रहेगा ही। तो, भीतर की गहराई से प.पू. बापा को हृदय में भावना करके, प्रार्थना करके वह निकाल ही देना। वे हमारे लिए 'एक' का अंक है। हमारा सर्वस्व-मन, बुद्धि, चित्त, अहम्, प्राण सभी उन्हीं में हैं और संबंध वाले भी उन्हीं के हैं। तो प्रेम से, प्रभु का–बापा को जंचता हो वह करने की तीव्र अभीप्सा, भावना स्वरूपयोग में दो बार करनी और साक्षीभाव दृढ़ करना। इससे अक्षरधाम का सुख जरूर-जरूर आएगा ही। यह आजमाई हुई बात लिखी है। तो सभी अमल करना। इतना अमल दिल से जरूर करना व आपस-आपस में खूब दिव्यता रखकर सूक्ष्म अहम् एवं स्वरूपलक्षी तुम्हारे तरीके के अनुभव की मान्यता छोड़कर, पू. बापा की प्रेरणा और अंतर की आवाज़ को झेलना और सुहृदभाव से वर्तना। इतना हमारा जरूर मानना। उसी का नाम ही बड़े पुरुष के साथ का सच्चा जुड़ना-संबंध।
2. दो बार सतत् अंतर्दृष्टि और प्रार्थना नवकार मंत्र से धून्य करके कर लेनी, जिससे जीवन में बल आएगा और उदासीनता या द्वंद्व-विक्षेप उड़ जायेंगे और आनंद वर्तेगा। हर एक विचार में प्रभु का ही नमक डाल कर, राह देखकर, प्रेरणा हो, वैसे करने की आदत डालना। उससे क्रिया में भी बल मिलेगा और पुष्टि होगी। इससे व्यापक में श्याम दिखाई पड़ेंगे; एकता स्थापित होगी।
3. पू. बापू, राजू, हरख, हर्षद वगैरे सभी युवकों, छत्रछाया में काम करते हो यह एक बात,

निष्ठा से करो वह दूसरी बात,
सम्पूर्ण आत्मबुद्धि से और प्रीति के संबंध से करो-वह तीसरी बात,
और केवल निर्दोषबुद्धि से, ब्रह्मस्वरूप मानकर करो वह चौथी बात और....
तुम्हारा मुख्य और मध्यबिन्दु सिर्फ प.पू. बापा और उनके स्वरूपों ही रहें व बालक बन कर प्रार्थना करो तो नो प्रॉबलम।
लेकिन हमारा जड़ मन व जड़बुद्धि जानबूझ कर पुरानी आदतें होने के कारण नई-नई प्रॉबलमस खड़ी करती रहती है ! वहां मूर्ति का आधार लेकर ही जियो और दो अच्छे भगवदी के साथ मिलजुल कर कार्य करना तो माया परम सुखदायी ही रहेगी, परम सुखी रह पाओगे। अच्छाई पेशी, बड़प्पन, मैं समझदार हूं, दूसरों को समझा दूं वगैरा सब छोड़ कर प.पू. बापा की ही ब्रह्मशक्ति को सब कुछ करने दो। समझते तो हैं, पर चौधरीपन, गफ़लत, आदतें आड़े आती हैं। वह टल ही जायें, नया जन्म हो जाए, ऐसा दृढ़ संकल्प करके सात दिन भी हिलमिल कर जीना। उससे एक अलग ही अनुभव नहीं-अनुभूति होगी। तुम सब के लिए-हेत वालों के लिए खूब प्रार्थना करूंगा, तो बल में रहना।

4. तुम सब खूब ही पुण्यशाली, भाग्यशाली और प्रभु के लाडले हो, सो ऐसा जोग मिला है। तो ज़रा भी उदासीन तो होना ही नहीं। प्रभु सुझाएं, वह आनन्द से करते रहना। उससे जो कसर होगी, दोष की नहीं-महिमा समझने की वह टल जाएगी और खास तो किसी भी मुक्तों की टीकाचर्चा न करके, उसका कोई तो अच्छा गुण होगा ही-वह गाना, देखना और उसके मुताबिक वर्तना। 7 दिन ऐसी नई आदत डालना।

लि. आपके ही दादुकाका के हेतपूर्वक
जय स्वामिनारायण !

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

435. कोटि कल्प से विषय भोगने की आदत पड़ी है। वह कुंआ भरा जा सके ऐसा नहीं है। उसे बंद करने का सभी शास्त्रों में एक ही उपाय बताया है–'निजात्मानं ब्रह्मरूप'–यह एक ही श्लोक है।

प्र.-5,220

436. व्यासजी ने बहुत तप किया, बहुत शास्त्र पुराण लिखा और खुद भगावन थे, तब भी शांति नहीं हुई। फिर नारदजी के वचन से श्रीमद् भागवत रचा और उसमें प्रगट भगवान व भगवान के भक्तों के गुणों का गान किया, तब परम शांति हुई। सो हमें भी वैसा करना चाहिए।

प्र.-5,221

437. हमें भगवान तथा साधु मिले हैं और पहचाने गए हैं। इससे अधिक कुछ करना शेष रहा नहीं है। फिर भी, शांति नहीं होती उसकी वजह यह है कि विषय में आसक्ति है और मन का धारा करा जाता है व आज्ञा नहीं पाल पाते एवं अज्ञान–ये तीनों के कारण शांति नहीं होती।

प्र.-5,222

438. लोहा, लकड़ी, पत्थर तथा सोने की बेड़ियां समय बीतने पर टूट कर टल जाए, लेकिन पंचविषय की बंधनरूप बेड़ी टले ऐसी नहीं। अग्नि–सूर्याग्नि, जठराग्नि तथा प्रलय काल की अग्नि एवं महाप्रलय की अग्नि में भी वासना ख़ाक नहीं हुई और बड़े-बड़े ऋषियों ने साठ हज़ार वर्ष तक तप किया तथा देह पर तो मिट्टी के ढेर जम गए पर वासना जली नहीं। ऐसी जो वासना वह तो ज्ञान प्रलय होने पर जलती है। भगवान् की मूर्ति का ध्यान व आज्ञा

पालने से वासना–लिंग देह का नाश हो जाता है। यह बात सौ जन्म में भी कही ना जाये और समझ में भी नहीं आए ऐसी है।

प्र.-5,223

439. वाघा खाचर ने पूछा कि सम्पूर्ण हुए कैसे कहा जाये? तब बोले कि–आत्मा और परमात्मा दोनों का ज्ञान हो जाए और छठा निश्चय कहा है, ऐसा हो तब पूर्णता पाई कही जाए और यह बात तो उपदेशक यदि निर्दोष हो और हमें उसका विश्वास हो, तो ही हो सकती है। वर्ना तो साधन करते-करते भगवान् की दृष्टि हो, तब बहुत समय बाद समझ में आए।

प्र.-5,224

440. तपस्या करके खाक हो जाए तो भी भगवान लेने नहीं आए और झूले पर सोता रहे, दूध, शक्कर, खीर खाए व दो नौकर सेवा करने वाले हों तथा कमाने वाले दूसरे हों उसे अतंसमय पर विमान में बिठाकर ले जाए। ये सुख पूर्व के संस्कार से हैं। उसी प्रकार विमान भी प्रारब्ध में ही होता है।

प्र.-5,225

441. कोई मज़दूरी कर करके मर जाये तो भी उसे खाना नसीब नहीं होता और किसी को तो कुछ न करने पर भी रुपये सामने से चले आते हैं। इसे पूर्व का प्रारब्ध कहा जाता है।

प्र.-5,226

442. आज हमारी चलती है, सो कोई नाम नहीं ले सकता और दूसरों की चलती नहीं, सो उन्हें दुःख है।

प्र.-5,227

443. भगवान के सिवा और कोई संकल्प उठे तो अंगारे के दाग सी हमें जलन नहीं होती, परन्तु उपासना के प्रताप से सभी दोष टल गए हैं। सो, मैं भगवान का हूँ और भगवान मेरे स्वामी हैं,इतना भाव रखना। शरीर-शरीरी तथा कारण-कार्य एवं अन्वय–व्यतिरेक इन वचनामृतों का अर्थ समझे बिना उत्तर नहीं करना। वर्ना बाधा आयेगी। इसलिए हमें तो स्वामी-सेवकभाव रखकर उपासना दृढ़ रखनी, जिसमें कोई बाधा ही नहीं !

प्र.-5,229

व्रतोत्सवसूची

1) दि. 7.8.95 सोमवार एकादशी, व्रत
2) दि. 10.8.95 गुरुवार राखी
3) दि. 18.8.95 शुक्रवार जन्माष्टमी, व्रत
4) दि. 22.8.95 मंगलवार एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'ANIRDESH' Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053